d{kk&8

vuq;Dr 0;kdj.k

lKk

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग – मातृ, स्वसृ आदि ।
हलन्त पुँल्लिङ्ग – राजन् ।

loZuke

अस्मद्, युष्मद्, तत्, एतत्, यत्, किम्, इदम्, सर्व के सभी रूपों का प्रायोगिक ज्ञान कराना।

fo'ks"k.k

संख्यावाची – 51 से 100 तक



x.kokph

संज्ञा के अनुसार उपयुक्त विशेषण के प्रयोग की क्षमता।

dkjd

पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त कारक एवं उपपद विभक्तियों के अन्तर को समझना एवं उनके प्रयोग की क्षमता।

fØ;k

लोट् और विधिलिङ्ग का प्रायोगिक ज्ञान।

milx

प्रमुख उपसर्गों के प्रयोग का समुचित ज्ञान जैसे–गच्छति, आगच्छति।

iR;;

क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् के योग से वाक्य संयोजन।

v0;;

पूर्व पठित अव्ययों के अतिरिक्त यावत्–तावत्, यद्यपि, तथापि, तर्हि, परन्तु, प्रायः, सहसा, दूरम्, निकटे, मिथ्या, क्रमशः अग्रे, अग्रतः का प्रायोगिक ज्ञान।

lfU/k

स्वर सन्धि का सामान्य ज्ञान।

f'k{k.k&fof/k ,oa rduhd